ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं में एच.आई.वी./एड्स की जानकारी का अध्ययन (शासकीय रानी रश्मिदेवी सिंह महाविद्यालय खैरागढ़, जिला– खैरागढ़, छुईखदान, गण्डई के संदर्भ में)

शोधार्थी **डॉ. एस कुमार,** आई.सी.टी.सी. काउॅसलर सिविल अस्पताल खैरागढ़ जिला–खैरागढ़,छुईखदान,गण्डई

सारांशः–एचआईवी/एड्स महामारी विकास और सामाजिक प्रगति के लिए एक सर्वाधिक विकट चुनौती है। इस महामारी से गरीबी और असमानता बढ़ती है और इससे समाज के सर्वाधिक वंचित लोगों अर्थात बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों और गरीबों पर भार बढ़ता है।[1] एड्स एक ला–इलाज बीमारी है, केवल जानकारी ही बचाव है। एचआईवी (ह्यूमन इम्यूनो डेफिशिएन्सी वायरस) उस वायरस या विषाणु को कहते हैं जो इंशानों के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता या बीमारियों से बचाने वाली ताकत को कम कर देता है। जिन व्यक्तियों के शरीर में यह विषाणु होता है, उन्हें एचआईवी पॉजीटिव कहा जाता है। अभी तक एचआईवी को मारने की कोई दवा या वेक्शिन नहीं मिली है, पर खोज जारी है।

कुंजी शब्दः– एच.आई.वी., एड्स, जानकारी, जागरूकता।

प्रस्तावनाः– भारत में एच.आई.वी. संक्रमण का पहला मामला 1986 में चेन्नई में रिपोर्ट किया गया। इस रोग का ऐसा कोई विशेष लक्षण नहीं है, जिसके द्वारा संक्रमित व्यक्ति को पहचाना जा सके। साथ ही लम्बे समय तक एड्स ग्रसित व्यक्ति को भी यह जानकारी नहीं होती कि वह एच.आई.वी. पोजीटिव है, केवल रक्त परीक्षण द्वारा ही एच. आई.वी. संक्रमण का पता चलता है।[2]

एच.आई.वी. संक्रमण का अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति एड्स से भी पीड़ित हो। एड्स के लक्षण दिखने में 8 से 10 वर्ष तक का समय लग सकता है। एड्स की पुष्टि चिकित्सकों द्वारा जॉच के पश्चात ही की जा सकती है। एचआईवी संक्रमण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को इस हद तक कम कर देता है कि इसके बाद शरीर अन्य संक्रमणों से लड़ पाने में अक्षम हो जाता है। इस प्रकार के संक्रमण को अवसरवादी संक्रमण कहा जाता है क्योंकि ये अवसर पाकर कमजोर हो रहे प्रतिरक्षा प्रणाली पर हावी हो जाते हैं जो बाद में एक बीमारी का रूप ग्रहण कर लेती है। एड्स प्रभावित लोगों में हुए कई संक्रमण, जो गंभीर समस्या पैदा कर सकते हैं या जानलेवा हो सकते हैं, को शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली नियंत्रित करती है। एड्स शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को इतना दुष्प्रभावित कर देता है कि इस गंभीर बीमारी की रोकथाम या इसका उपचार करना आवश्यक हो जाता है।[3]

छत्तीसगढ़ में एचआईवी की स्थिति – राज्य में वर्ष 2007 से फरवरी 2022 की स्थिति में 7198 से अधिक एचआइवी पीड़ितों की मौत हुई है। वहीं प्रदेश में 37,547 एचआईवी मरीज है। प्रदेश में लगातार एचआइवी मरीज सामने आ रहे हैं इसमें 25 से 49 आयु वर्ग के लोग शामिल हैं। इसमें करीब 60 फीसद पुरूष वर्ग व 40 फीसद महिलाओं की संख्या है ।[4]

एचआईवी/एड्स के कारण –

1. एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति से असुरक्षित यौन संबंध बनाने से।
2. एच.आई.वी. संक्रमित खून के चढ़ जाने से।
3. एच.आई.वी. संक्रमित सुई के प्रयोग से।
4. एच.आई.वी. संक्रमित गर्भवती मॉ से उसके होने वाले बच्चे को।

एचआईवी/एड्स के लक्षणः– एचआईवी के लक्षण संक्रमण के चरण के आधार पर भिन्न होते हैं। हालांकि एचआईवी के साथ रहने वाले लोग संक्रमित होने के बाद पहले कुछ महीनों में सबसे अधिक संक्रामक होते हैं, कई लोग संक्रमण बढ़ने की स्थिति तक अपनी संक्रमण की स्थिति से अनजान होते हैं। प्रारंभिक संक्रमण के बाद पहले कुछ हफ्तों में लोगों को बुखार, सिरदर्द, दाने या गले में खराश सहित कोई लक्षण या इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी का अनुभव नहीं हो सकता है। चूंकि संक्रमण धीरे–धीरे प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर करता है, वे अन्य लक्षण और लक्षण विकसित कर सकते हैं, जैसे सूजन लिम्फ नोड्स, वनज घटाने, बुखार, दस्त और खांसी। उपचार के बिना, वे तपेदिक (टीबी), क्रिप्टोकोकल मेनिनजाइटिस, गंभीर जीवाणु संक्रमण, और लिम्फोमास और सरकोमा जैसे कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों को भी विकसित कर सकते हैं।[5]

एचआईवी/एड्स संबंधी मामलों में जागरूक बनें– एचआईवी संक्रमण को रोकने का एकमात्र तरीका है– लोगों को इस बारे में जागरूक किया जाए। लोगों को इसकी उत्पत्ति एवं प्रसार के बारे में बताया जाए ताकि लोग इस महामारी के दुष्प्रभाव से बच सकें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम की शुरूआत की

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

गई जिसका उद्देश्य जन–जन तक एचआईवी/एड्स एवं इसके रोकथाम से संबंधित सभी सूचनाएँ एवं जानकारियाँ पहुँचाना है।[6] विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एच आईवी एड्स की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस घोषित किया है ताकि पूरी दुनिया में एचआईवी एड्स के विरूद्ध जागरूकता लायी जाए तथा इसके उन्मूलन के लिए सामाजिक स्तर पर प्रयास किया जाए।

अतः स्पष्ट है एचआईवी/एड्स के उन्मूलन हेतु जागरूकता एवं सामाजिक पहल अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं में एचआईवी एड्स के प्रति कितनी जागरूकता है ? यह जानने का प्रयास प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य निम्नांकित हैं–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं में एचआईवी एड्स की जानकारी का अध्ययन करना।
2. एड्स की जानकारी में शिक्षा की भूमिका ज्ञात करना ।
3. एड्स जागरूकता के लिए विभिन्न संसाधनों की भूमिका ज्ञात करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :– प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के नवीन जिला– खैरागढ़, छुईखदान, गण्डई अंतर्गत खैरागढ़ विकासखण्ड के शासकीय रानी रश्मिदेवी सिंह महाविद्यालय खैरागढ़ के विशेष संदर्भ में है। खैरागढ़ विकासखंड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 802.67 वर्ग कि.मी. है। कुल ग्रामों की संख्या 226, जिसमें राजस्व ग्राम की संख्या 221 तथा 5 वन्य ग्राम है। 114 ग्राम पंचायत तथा 1 जनपद पंचायत है। सभी ग्राम विद्युतीकृत तथा पेयजल सुविधा युक्त ग्राम है। तथा विकासखंड का कुल जनसंख्या 192222 है।

3.2. उत्तरदाता का चुनाव :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाता का चुना स्वयंचयनित निदर्शन प्रक्रिया द्वारा संपादित किया गया है। प्रश्नावली बनाकर (गूगल फार्म में), महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं को वाट्सप ग्रुप के माध्यम से भेजा गया तथा प्रश्नावली भरने हेतु आग्रह किया गया। कुल 96 छात्र/छात्राएँ द्वार प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता के रूप में सम्मिलित हैं।

तथ्यों का संकलन :–प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों के संकलन हेतु स्त्रोत मुख्यतः दो प्रकार के है–

(क) प्राथमिक तथ्यों का संकलनः– विषय से संबंधित प्राथमिक तथ्यों का संकलन निम्न उपकरणों के द्वारा संपन्न किया गया–

1. प्रश्नावली

(ख) द्वितीयक तथ्यों का संकलनः– विषय से संबंधित द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु निम्न स्त्रोतों का प्रयोग किया गया–

1. शोध पत्र, शोध प्रबंध।
2. विषय या अध्ययन संबंधी पुस्तकें।
3. शासकीय दस्तावेज।
4. अन्य माध्यम (जैसे–समाचार पत्र, पत्र–पत्रिकायें, इंटरनेट, टेलीविजन व अन्य)।

विश्लेषण :–

उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारी – प्रस्तुत शोध अध्ययन में चयनित उत्तरदाता 17 से 28 अयु वर्ग है। 54.2 प्रतिशत उत्तरदाता छात्रा एवं 45.8 प्रतिशत उत्तरदाता छात्र हैं। 68.8 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक तथा 31.3 प्रतिशत स्नातकोत्तर में अध्ययनरत् छात्र/छात्राएं उत्तरदाता में सम्मिलित हैं।

आरेख क्रमांक – 3 उत्तरदाताओं की जाति

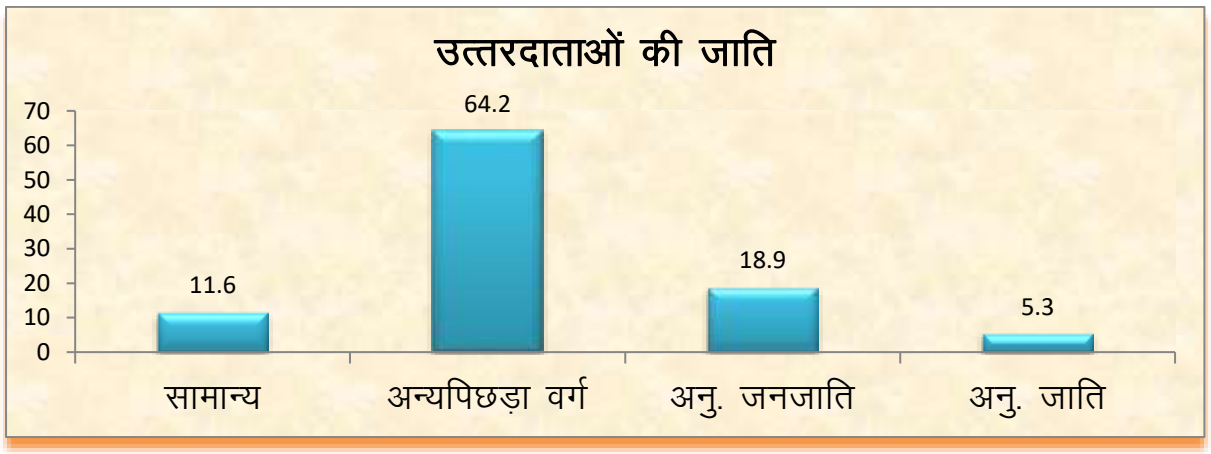

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

उपरोक्त आरेख से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 64.2 प्रतिशत उत्तरदाता अन्यपिछड़ा वर्ग से 18.9 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसुचित जनजाति, 11.6 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य तथा 5.3 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति वर्ग से अध्ययन में सम्मिलित हैं। अतः स्पष्ट है उपरोक्त अध्ययन में सभी जाति वर्ग के छात्र/छात्राएँ सम्मिलित है।

आरेख क्रमांक – 4
उत्तरदाताओं की मूल निवास

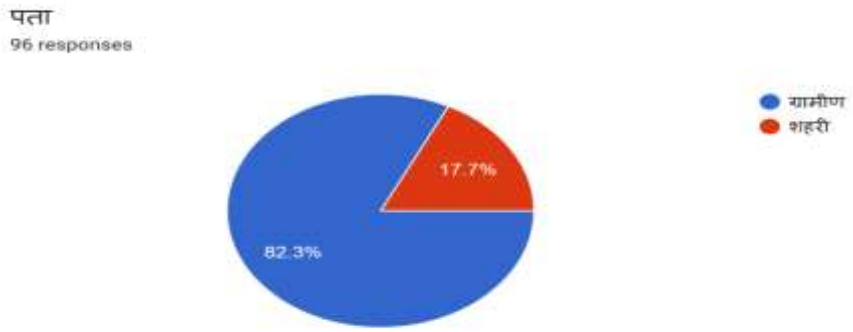

उपरोक्त आरेख के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 82.3 प्रतिशत उत्तरदाता छात्र/छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्र के निवासी है तथा 17.7 प्रतिशत उत्तरदाता शहरी क्षेत्र के निवासी हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में निवासरत् छात्र/छात्राएँ सम्मिलित हैं।

आरेख क्रमांक – 5
उत्तरदाताओं के परिवार का आकार

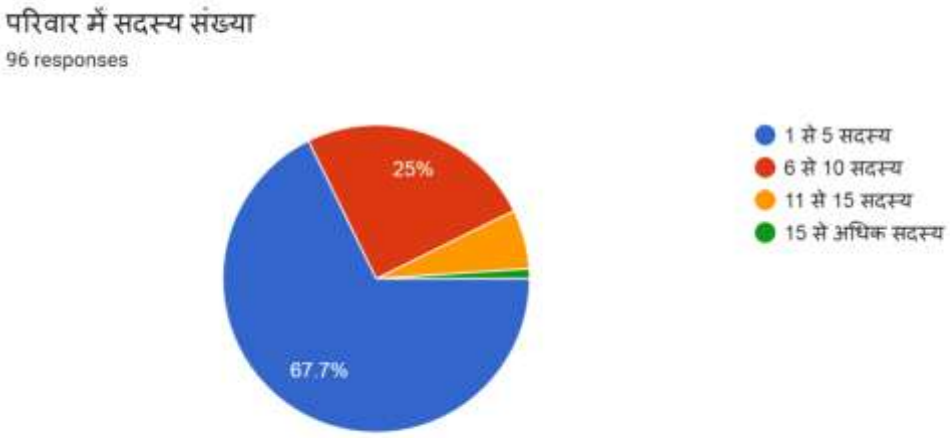

उपरोक्त अध्ययन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 67.7 प्रतिशत उत्तरदाता लघु परिवार के सदस्य है , 25 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम परिवार के सदस्य , एवं 6.3 प्रतिशत उत्तरदाता वृहद परिवार के सदस्य तथा 1 अतिवृहद परिवार के सदस्य हैं।

विषय से संबंधित जानकारी – विषय से संबंधित जानकारी अग्रलिखित है

आरेख क्रमांक – 7
उत्तरदाताओं को एचआईवी /एड्स की जानकारी होना

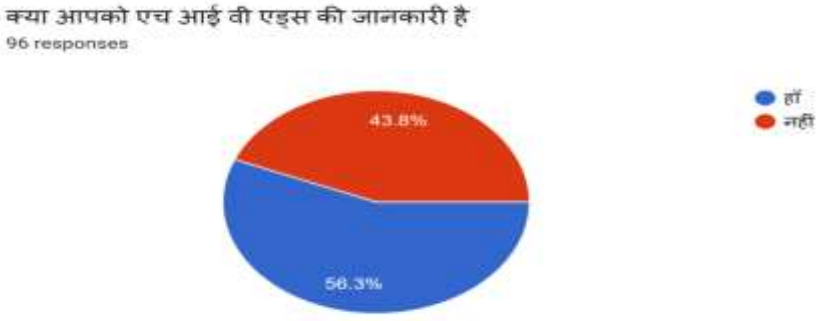

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

प्रस्तुत आरेख से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 56.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को एचआईवी/एड्स की जानकारी है तथा 43.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं को जानकारी नहीं है।

आरेख क्रमांक – 8
उत्तरदाताओं को एचआईवी /एड्स की जानकारी का स्त्रोत

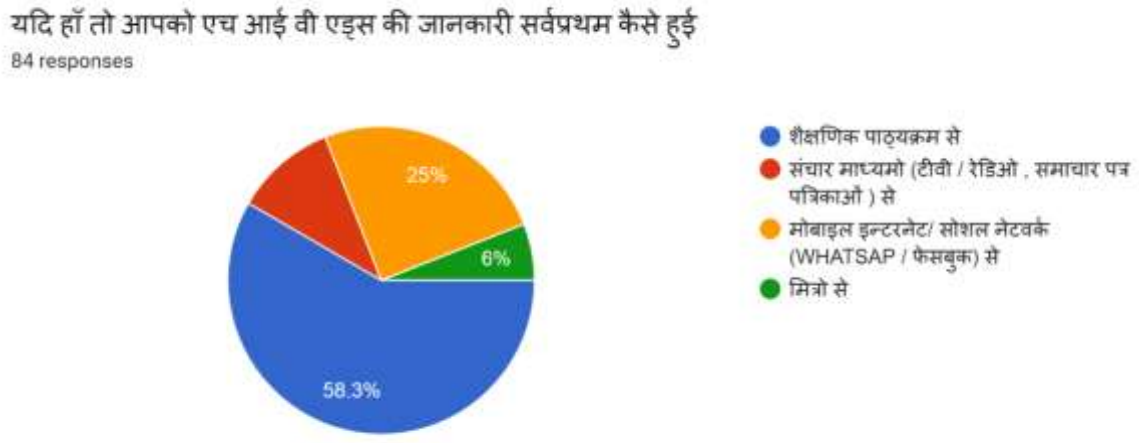

एचआईवी/एड्स की जानकारी का स्त्रोत संबंधि अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 58.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शैक्षिक पाठ्यक्रम से जानकारी मिली है, 10.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को संचार माध्यमों टीवी/रेडियो, समाचार पत्र पत्रिकाओं से 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं को मोबाइल इंटरनेट/सोशल नेटवर्क से तथा 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं को मित्रों के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई हैं

आरेख क्रमांक – 9
एचआईवी एड्स को छूत की बीमारी मानना

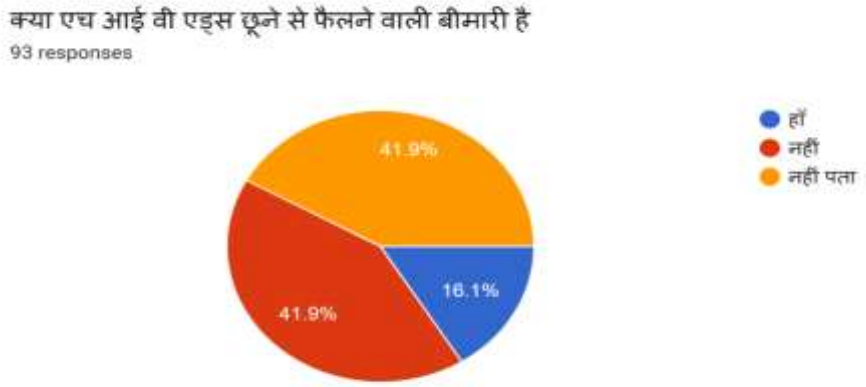

एड्स के मामले में छुआ–छूत की धारना को गलत मानते हुए सर्वाधिक 41.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना की एचआईवी/एड्स छूत की बीमारी नहीं है, 41.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं को जानकारी नहीं है लेकिन 16.1 प्रतिशत उत्तरदाता एड्स की बीमारी को छूत की बीमारी माना है ।

आरेख क्रमांक – 10
महाविद्यालयों /शैक्षणिक संस्थानों में यौन संक्रमित बीमारियों की शिक्षा के प्रति विचार

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

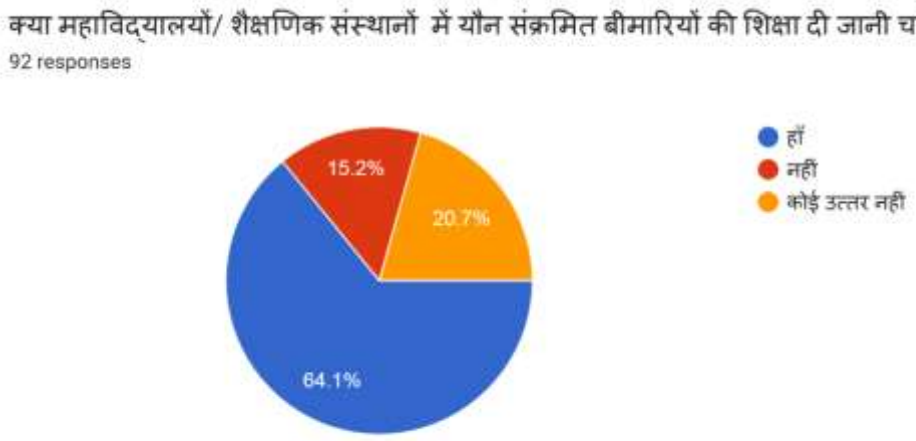

महाविद्यालय के 64.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि महाविद्यायल/शैक्षणिक संस्थानों में यौन संक्रमण से संबंधित बीमारीयों की शिक्षा दी जानी चाहिए एवं जागरूकता संबंधि कार्यक्रम भी करवाये जाने चाहिए। 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत नहीं है, तथा 20.7 प्रतिशत छात्र/छात्राएं कोई उत्तर नहीं दिए हैं।

आरेख क्रमांक – 11
उत्तरदाताओं का एचआईवी परीक्षण

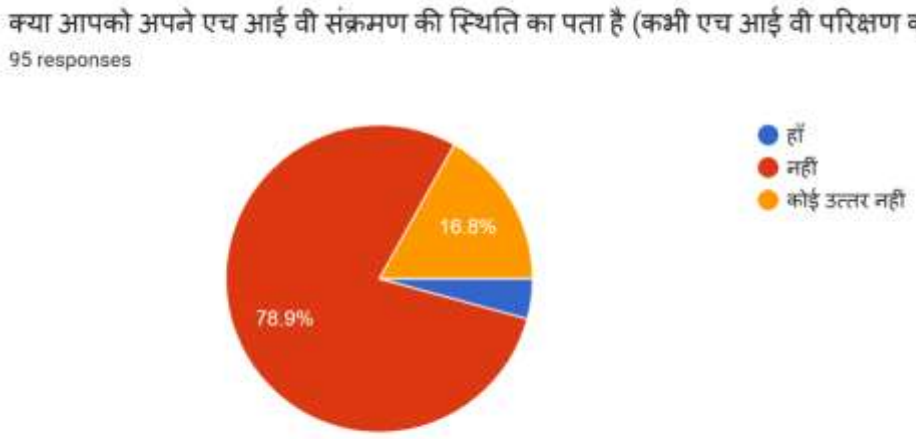

आरेख के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 78.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपना एचआईवी परीक्षण नहीं कराया है उनको अपने एचआईवी की स्थिति का पता नहीं है, 16.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई उत्तर नहीं दिए है तथा 4.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उनके एचआईवी संक्रमण की स्थिति का पता है उन्होने अपना एचआईवी परीक्षण कराया है।

आरेख क्रमांक – 12
सामान्य व्यक्ति का एचआईवी परीक्षण के प्रति विचार

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

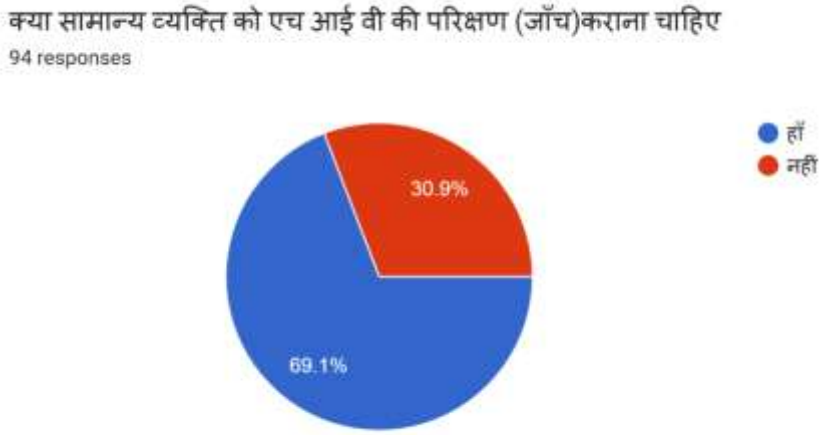

अपने एचआईवी स्थिति को जानने के लिए सामान्य व्यक्ति का एचआईवी परीक्षण के प्रति विचार संबंधि अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 69.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सामान्य व्यक्तियों को भी एचआईवी परीक्षण कराना चाहिए, 30.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं।

आरेख क्रमांक – 13

एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के इलाज का ज्ञान होना

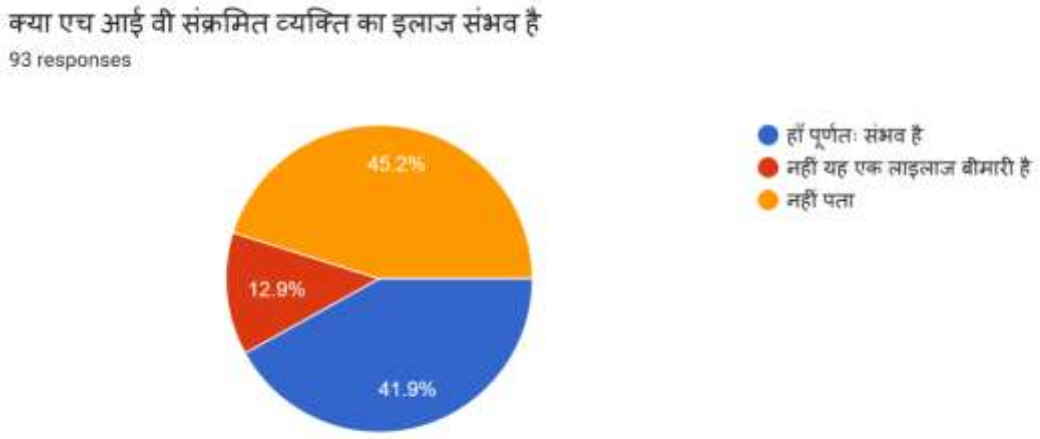

आरेख के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के इलाज के संबंध में 12.9 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को सही जानकारी है कि यह एक लाइलाज बीमारी है, 45.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं को जानकारी नहीं है तथा 41.9 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को इसकी सही जानकारी नहीं है।

उपरोक्त अध्ययन से ज्ञात होता है कि एचआईवी/एड्स के इलाज के संबंध में पर्याप्त जानकारी का अभाव है। इस संबंध में छात्र/छात्राओं को सही जानकारी दिये जाने की आवश्यकता है।

आरेख क्रमांक – 14

एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के प्रति विचार

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

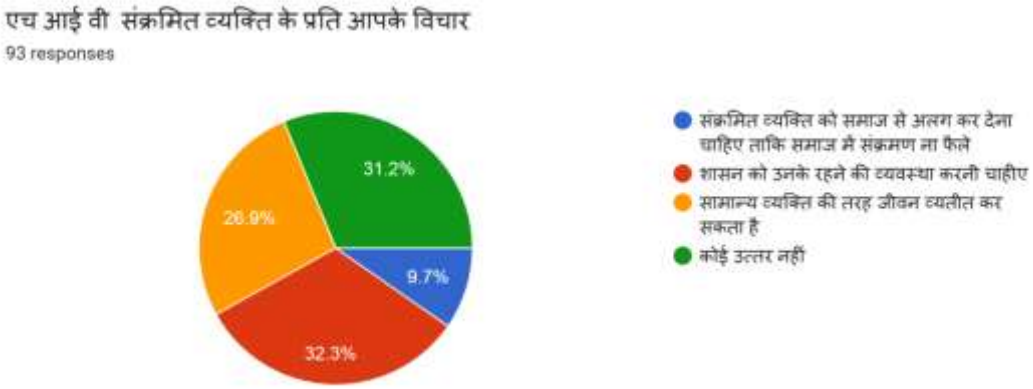

उपर्युक्त आरेख के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 26.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ज्ञात है कि एच.आई.वी. पॉजीटिव व्यक्ति सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन जी सकता है परन्तु अन्य छात्र/छात्राओं को सही जानकारी का अभाव है।

आरेख क्रमांक – 15
एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के प्रति व्यवहार

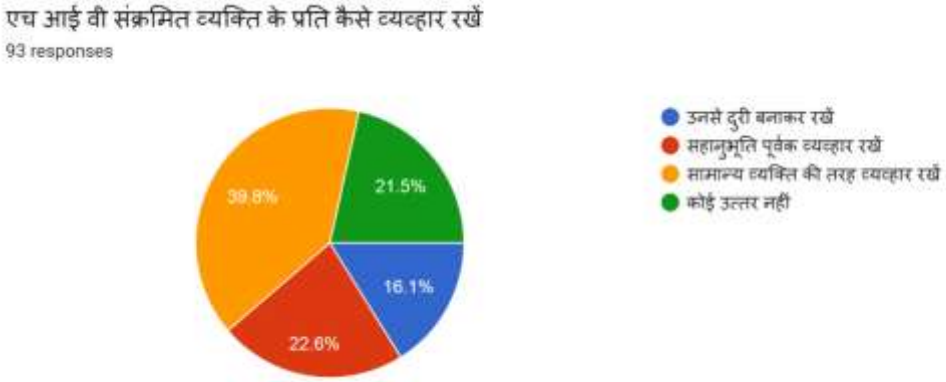

एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के प्रति व्यवहार के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 39.8 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को ज्ञात है कि एच.आई.वी. पॉजीटिव व्यक्ति के साथ सामान्य व्यक्ति की तरह ही व्यवहार रखें परन्तु शेष छात्र/छात्राओं को सही जानकारी का अभाव है।

आरेख क्रमांक – 16
खैरागढ़ में एचआईवी परीक्षण की सुविधा का ज्ञान होना

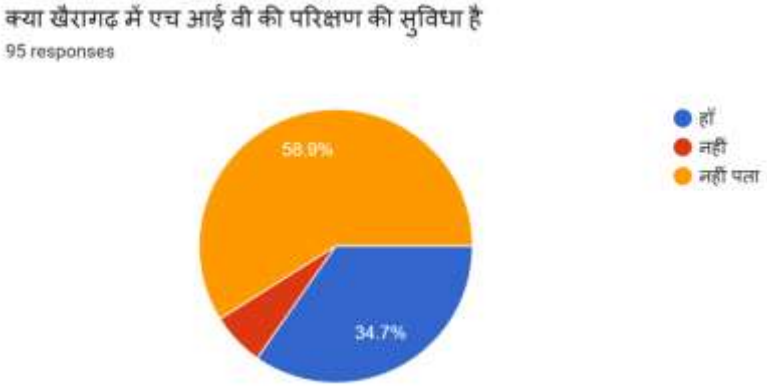

खैरागढ़ में एचआईवी परीक्षण की सुविधा संबंधि अध्ययन से ज्ञात होता है कि 34.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ज्ञात है कि खैरागढ़ में एचआईवी परीक्षण की सुविधा है तथा शेष छात्र/छात्राओं को या तो जानकारी नहीं है या गलत जानकारी है।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

निष्कर्ष :– अध्ययन के विश्लेषण से निष्कर्ष निकलाता है कि अधिकांश छात्र छात्राओं को एचआईवी/एड्स संबंधी जानकारी है। जानकारी के विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि शैक्षिक पाठ्यक्रम, संचार माध्यमों टीवी/रेडियो, समाचार पत्र पत्रिकाओं मोबाइल इंटरनेट/सोशल नेटवर्क से तथा मित्रों के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई हैं। एड्स के मामले में छुआ–छूत की धारणा को गलत मानते हुए अधिकांश उत्तरदाताओं ने माना की एचआईवी/एड्स छूत की बीमारी नहीं है, परन्तु कुछ छात्र/छत्राओं को इनकी जानकारी नहीं है या गलत जानकारी है, जो इसे छूत की बीमारी मानते हैं। उपर्युक्त आंकडो के आधार पर कह सकते हैं कि छात्र/छात्राओं को सही जानकारी दिए जाने की आवश्यकता ताकि एच.आई.वी./एड्स के मामले में छुआ–छूत की धारना को खत्म किया जा सके है। महाविद्यायल/शैक्षणिक संस्थानों में यौन संक्रमण से संबंधित बीमारीयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। कुछ छात्र/छात्राओं को अपने एचआईवी स्टेटस की जानकारी है अर्थात अपना एचआईवी परीक्षण कराया है अधिकांश छात्र/छात्राओं को अपने एचआईवी स्टेटस जानकारी नहीं है। एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के उपचार एवं उनके प्रति किए जाने वाले व्यवहार के प्रति जानकारी का अभाव छात्र/छात्राओं में देख गया।

वर्तमान समय में एचआईवी एड्स की जानकारी को जन–जन तक पहुॅचाने के लिए पर्याप्त प्रचार प्रसार किए जाने की आवश्यकता है, ताकि एचआईवी एड्स की संक्रमण को रोका जा सके। क्योंकि जानकारी ही बचाव है। प्रचार प्रसार हेतु सरकार द्वारा भी प्रभावी कदम उठाए गए हैं, दूरदर्शन, आकाशवाणी, विभिन्न शहरो में बस स्टैण्ड आदि में होर्डिंग बोर्ड के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक लोगो को जागरूक किया जा सके। महाविद्यालय में रेडरिबन क्लब एवं एन.एस.एस. के माध्यम से भी छात्र/छात्राओं को एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

संदर्भ सूची –

1. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार एच. आई.वी. एड्स एवं श्रम जगत पर राष्ट्रीय नीति पृ. क्र. 1
2. अग्रवाल विमलेश 2017 महाविद्यालयीन छात्र छात्राओं में एड्स जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, शोध मंथन *ISSN: (P): 0976-5255, (e)*
3. https://www.इंडिया.सरकार.भारत/spotlight/भारत–का–एड्स–विरोधी–अभियान–भारत–को–एड्स–से–मुक्त–करने–की–दिशा–में–एक–प्रयास(22/11/2022)
4. नईदुनिया दैनिक समाचार पत्र Publish Date: | Mon, 28 Feb 2022
5. https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/hiv-aids(22/11/2022)
6. https://www.इंडिया.सरकार.भारत/spotlight/भारत–का–एड्स–विरोधी–अभियान–भारत–को–एड्स–से–मुक्त–करने–की–दिशा–में–एक–प्रयास(22/11/2022)

Copyright @ 2023 Author